E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 373-376
Received: 26-05-2020
Accepted: 30-06-2020

मुकेश कुमार निराला
शोध छात्र (भूगोल), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

डॉ. एस.पी. पाण्डेय
प्राध्यापक भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह उत्कृष्टता महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
मुकेश कुमार निराला
शोध छात्र (भूगोल), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

मध्यप्रदेश के रीवा जिला की ग्राम पंचायत भीर में स्वच्छ भारत अभियान के प्रभावों का सुलभ शौचालय के सन्दर्भ में प्रतिदर्श भौगोलिक अध्ययन

मुकेश कुमार निराला एवं डॉ. एस.पी. पाण्डेय

सारांश
मध्यप्रदेश के रीवा जिला में स्थित नईगढ़ी विकासखण्ड की भीर ग्राम पंचायत जिले की अन्य ग्राम पंचायतों की भांति केन्द्र एवं राज्य शासन के निर्देशानुसार स्वच्छ भारत अभियान के कार्यक्रमों को क्रियान्वित कर रही है, किन्तु अभी तक वान्छित परिणाम प्राप्त नही हो सका। दैव निदर्शन विधि से 40 परिवारों को गहन सर्वेक्षण करते हुए स्वच्छता सम्बन्धी अध्ययन किया गया जिसमें 65.56 प्रतिशत परिवारो ने अभी तक (2018 अगस्त) शौचालय का निर्माण करा सके, शेष 34.44 प्रतिशत लोग अभी भी शौच क्रिया के लिए बाहर जाते है। जिन लोगों द्वारा अभी तक शौचालय का निर्माण करवाने में समर्थ नही हो सके उन्हें न तो शासकीय अनुदान ग्राम पंचायत द्वारा अभी तक प्रदाय नही किया गया या आधा–अधूरा अनुदान दिया गया, जबकि 4.5 प्रतिशत लोगों ने अनुदान तो प्राप्त किया, परन्तु उस मद से व्यय नही किये। निष्कर्ष रूप में विभिन्न प्रशासनिक – आर्थिक समस्याओं के कारण केन्द्र सरकार द्वारा संचालित स्वच्छ भारत अभियान पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त नही कर पा रहा है, जिसके त्वरित निदान की आवश्यकता है।

मूल शब्दः– ग्राम पंचायत, स्वच्छ भारत अभियान, अनुदान, शौचालय, प्रशासनिक–आर्थिक, लक्ष्य

प्रस्तावना
भारत विविधताओं का देश है, किन्तु इन विविधताओं के बीच अनेक सारी समानताए भी विद्यमान मिलती है। इन समानताओं में एक प्रमुख समांगता आम भारतीय का मलिनता के बीव निवास करना है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उसके स्वास्थ्य एवं आर्थिक क्रिया कलापों पर पड़ता है। देश में स्वच्छता के लिए महात्मा गांधी [1] के समय से प्रयास किये जा रहे है, किन्तु देश के गांव उनकी गलियां स्वच्छ नही बन सकी। प्रतिवर्ष मलिनता जन्य संक्रामक रोगों की पुनरावृत्ति होती रही, लोग प्रभावित होते रहे। वर्ष 2014, अगस्त 15 को प्रधानमंत्री द्वारा देश को गंदगी से विमुक्त कराने के लिए राष्ट्र व्यापी स्वच्छ भारत अभियान उत्तहूत कर समाज के प्रत्येक वर्ग को इससे जोड़ते हुए योजनानुसार विभिन्न कार्यक्रमों को प्रारंभ किया। [2] इस योजना के प्रथम चरण में सबकों शौचालय की सुलभता मुहैया कराया जाना लक्षित किया गया। इस योजना को देश के सुदूर अंचलों में निवास करने वाले गरीब संवर्ग के लोगों को ग्राम पंचायत के माध्यम से अनुदान प्रदाय कर शौचालय निर्माण कार्यक्रम को गतिशील किया गया। प्रस्तुत अध्ययन म.प्र. के रीवा जिले की नईगढ़ी जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत भीर को प्रतीक अध्ययन हेतु चयन कर स्वच्छ भारत अभियान के प्रभावों एवं वान्छित परिणाम न प्राप्त होने की समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

विधि तंत्र
प्रस्तावित शोध कार्य ग्राम पंचायत भीर विकासखण्ड नईगढ़ी से सम्बन्धित है, जो दैव निदर्शन विधि द्वारा चयनित 60 परिवारों के 87 प्रश्नों द्वारा साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के विश्लेषण पर आधारित है। ग्राम पंचायत में कुल 1083 परिवार (2011) निवासरत है। इस प्रकार ग्राम के कुल परिवारों से साक्षात्कार परिवार 5.54 प्रतिशत भाग है। अध्ययन में सांख्यिकीय विधियों एवं आरेखों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय
अध्ययन क्षेत्र भीर ग्राम पंचायत रीवा जिला के नईगढ़ी विकासखण्ड में 24°51′ उ. अंक्षाश एवं 81°35′ पूर्वी देशान्तर पर वि. खं. नईगढ़ी से 18 कि.मी. दूर उत्तर स्थित है। [3] प्रधानमंत्री सड़क द्वारा इसकी गम्यता वि.खं. मुख्यालय तथा उससे आगे जिला एवं प्रदेश स्तर की सड़के गम्यता सुनिश्चित करते है। वस्तुतः ग्राम पंचातय भीर जो विन्ध्यन कगारी मेखला में स्थित है, में 02 ग्राम तारामजरी

एवं भीर ग्राम शामिल है। समग्र ग्राम पंचायत की जनसंख्या 5268 व्यक्ति (2011) तथा प्रतिवेदित क्षेत्रफल 755.35 हैक्टर है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रतिवेदित ग्राम पंचायत में 1083 परिवार निवास कर रहे है। [4]

भौगोलिक दृष्टि से ग्राम पंचायत रीवा पठार के कगारी भाग में स्थित है जहाँ ढाल की प्रवणता अचानक बढ़ने लगती है। ढलुवा भूमि के कारण चादरवत एवं नालीदार दोनों प्रकार के दृष्यांश दृष्टिगोचर होते है। जिले की अन्य क्षेत्रों की भांति मानसूनी जलवायु की विशेषताएँ इस ग्राम पंचायत में मिलती है। कगारी क्षेत्र की स्थिति के कारण संतृप्त जल–तल का अभाव पाया जाता है।

ग्राम पंचायत की प्रतिवेदित जनसंख्या 5268 व्यक्ति है, जिनमें 53. 49 प्रतिश्त पुरुष एवं 46.51 प्रतिशत महिला है। कुल जनसंख्या में 64.01 प्रतिशत सामान्य, 34.24 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 1. 74 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या पायी जाती है। [5]

भूमि उपयोग की दृष्टि से 42.50 प्रतिशत भाग कृर्षि कार्य, 3.2 प्रतिशत वन, 20.62 प्रतिशत विभिन्न प्रकार की पड़ती एवं शेष कृषि के अतिरिक्त कार्यो में प्रयुक्त की जाती है। प्रमुख कृषि उपजों में चावल, अलसी, मसूर, चना एवं तुअर है।

कृषि के अतिरिक्त पशुपालन एवं विपणन खनन जैसे आर्थिक कार्यों को संपादित किया जाता है। नईगढ़ी विकासखण्ड की प्रमुख मंडियों में से एक भीर भी है।

इस ग्राम पंचायत में आयुर्वेद औषधालय, पो.आ., मंध्यांचल बैंक, सोसायटी, बस स्टैण्ड एवं पुलिस चौकी, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उ.मा. विद्यालय की सुविधाएं उपलब्ध है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

चहे–अनचाहे मानवीय उत्पाद पर्यावरण को दूषित करते रहते है। इन दूषित अवयवों को गन्दगी के रूप में सम्बोधित किया जाता है। इनके प्रभावकारी परिणामों में विभिन्न प्रकार के रोगों की उत्पत्ति का होना है, जो मानव स्वास्थ्य एवं उसकी कार्यक्षमता को प्रभावित करते है। यद्यपि मानवीय क्रियायें ही है जिसे निष्पादन द्वारा पर्यावरण एवं मानवीय स्वास्थ्य दोनों की सुरक्षा संभव होती है। स्वच्छता एक अपरिहार्य आवश्यकता है, इसे सदियों से समझा गया किन्तु मैदानी स्तर पर 2014 में स्वच्छ भारत अभियान योजना द्वारा मूर्तरूप प्रदान किया गया। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण एवं नगरीय सभी क्षेत्रों को स्वच्छ रखने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का शुभारंभ किया गया जिनमें खुले में शौच न किया जाय उसके लिये सुलभ शौचालयों का निर्माण किया जाना, घर एवं परिसरों की साफ–सफाई , ठोस एवं तरल कचरे का निपटान, शुद्ध पेयजल उपलब्ध आदि कार्य संचालित किये गये। चूंकि खुले में शौच क्रिया वृहद राष्ट्रीय समस्या थी। अतः इसके निदान के लिए शासकीय, जनभागीदारी एवं व्यक्तिगत स्तरों पर प्रयास प्रारंभ किये गये।

सुलभ शौचालय का विकास

ग्राम पंचायत भीर में शासकीय योजनान्तर्गत सुलभ शौचालय के लिए पात्र हितग्राही वही होंगे जो बी.पी.एल. सूची में जुड़े है। शेष अन्य लोग अपने व्यय से सुलभ शौचालय निर्माण करेंगे। यद्यपि सुलभा शौचालय प्रत्येक परिवार में अनिवार्यता होना चाहिए ताकि खुले में शौच से मुक्ति मिल सके। अध्ययन के लिए 60 परिवारों में शासकीय योजनान्तर्गत शौचालय निर्माण की प्रवृत्ति निम्नानुसार रही है।

तालिका 1: भीर ग्राम पंचायत में सुलभ शौचालय का विकास

क्र.		अध्ययन में शामिल परिवारों की संख्या	शौचालय विहीन परिवार संख्या	शौचालय युक्त परिवार संख्या	सख्या	शौचालय विहीन भवन का प्रतिशत	शौचालय युक्त भवनों का प्रतिशत	शौचालय वृद्धि प्रतिशत	कुल वृद्धि से प्रतिशत
1.	2014–15	60	51	09	–	85.00	15.0	–	–
2.	2015–16	60	43	17	08	71.66	28.34	88.8	88.8
3.	2016–17	60	34	26	09	56.66	43.34	52.94	188.8
4.	2017–18	60	21	39	13	35.00	65.0	50.00	333.33

स्त्रोत – साक्षात्कार पर आधारित 2018

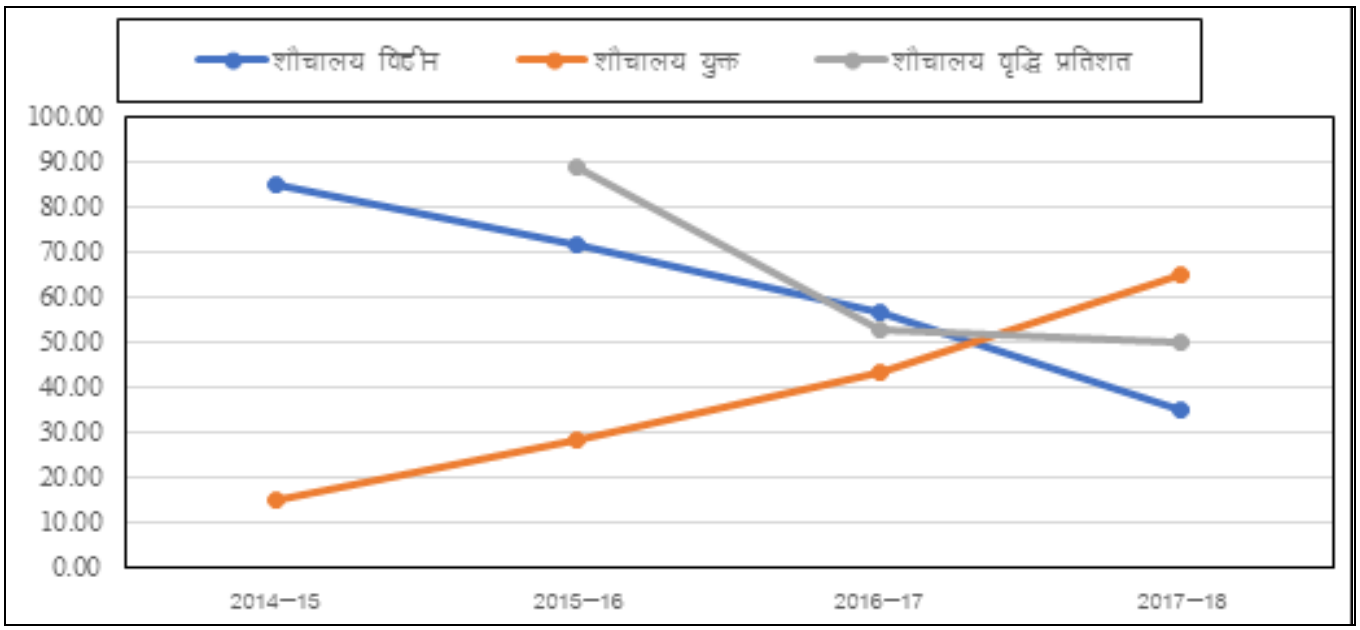

आकृति 1: भीर ग्राम पंचायत में सुलभ शौचालय के विकास (प्रतिशत में)

तालिका 1 के अनुसार मार्च 2015 में भीर ग्राम पंचायत में सर्वेक्षित 60 परिवारों में 15 प्रतिशत परिवार के घरों में शौचालय थे जो मार्च 2016 की स्थिति में बढ़कर 28.34 प्रतिशत हो गये। इस प्रकार एक वर्ष की समयावधि में ग्राम पंचायत के प्रयासों एवं स्वयं प्रेरणा से 88.8 प्रतिशत शौचालय में वृद्धि अंकित हुई। मार्च 2017 एवं मार्च 2018 में आधार वर्ष 2016 एवं 2017 की तुलना में शौचालय संख्या में क्रमशः 52.94 प्रतिशत एवं 50.00 प्रतिशत की अभिवृद्धि हुई है। आधार वर्ष मार्च 2015 में 09 शौचालयों की तुलना में मार्च 2018 में सुलभ शौचालयों की संख्या बढ़कर 39 हो गयी। इन 04 वर्षो के समयावधि में 333.33 की वृद्धि अंकित हुई। उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रस्तावित स्वच्छ भारत अभियान में तेजी से विकास हो रहा है।

सुलभ शौचालय की उपलब्धता का स्वरूप :

साक्षात्कार में शामिल 60 परिवारों में कितने परिवारों के पास सुलभ शौचालय मौजूद है तथा कितने परिवारों के पास नहीं है कि स्थिति का आंकलन उपलब्धता के स्वरूप पर निर्भर करता है। वर्ष 2018 की स्थिति में साक्षात्कार शामिल कुल परिवार संख्या 60 में 39 लोगों के पास शौचालय है, जबकि 21 परिवारों को अभी तक (2018 मार्च की स्थिति) मलत्याग हेतु वाहर जाना होता है। इस प्रकार 2018 मार्च की स्थिति में मात्र 65.00 प्रतिशत परिवारों के पास सुलभ शौचालय है, शेष 35.00 प्रतिशत परिवारों के पास सुलभ शौचालय उपलब्ध नही है। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्राम पंचायत भीर पूर्णतः लक्ष्य को प्राप्त नही कर सका, अभी 35 प्रतिशत लोग शौचालय से दूर है, अर्थात यह ग्राम स्वच्छ ग्राम की श्रेणी में अभी तक सम्मिलित नही हो सका है।

जिन परिवारों के पास शौचालय है, उनमें 34 परिवारों में एक शौचालय है, जबकि 06 परिवारों में 02 या दो से अधिक शौचालय है। कुल शौचालय संख्या के 88.46 प्रतिशत ग्राम पंचायत के अनुदान पर शेष 11.54 प्रतिशत परिवार स्वयं के व्यय पर शौचालय का निमार्ण कराया गया है।

ग्राम पंचायत सरपंच के प्रतिवेदन के अनुसार समग्र ग्राम पंचायत के परिवारों के घर में सुलभ शौचालय होना कहा गया है, अर्थात समग्र पंचायत शत–प्रतिशत शौचालय युक्त है, जबकि प्रतिदर्शी अध्ययन में उक्त तथ्य की पुष्टि नही हो सकी है।

साक्षात्कार में शामिल जिन 35 प्रतिशत परिवारों के पास शौचालय नही है, विभिन्न समस्याओं यथा ग्राम पंचायत द्वारा अनुदान की स्वीकृति न मिलना, अनुदान की मात्र एक किश्त मिलना, अन्य किश्तों का न मिलना, स्वीकृत एवं प्राप्त अनुदान राशि का अन्य कार्यो में व्यय कर दिया जाना अनुदान के लिए आवेदन न करना आदि महत्वपूर्ण तथ्य रहे है [6] जैसा कि निम्नांकित सारणी से स्पष्ट होता है–

तालिका 2: सुलभ शौचालय अनुपलब्धता के कारण 2018

शौचालय की अनुपलब्धता परिवारों की संख्या	क्र.	विवरण	संख्या	कुल से प्रतिशत
21	1.	अनुदान हेतु आवेदन न देना	05	23.80
	2.	अनुदान स्वीकृत न होना	09	42.86
	3.	एक किश्त का भुगतान	03	14.28
	4.	अनुदान का अन्य मदों में व्यय	03	14.28
	5.	अन्य	01	4.76
			21	100.00

स्त्रोतः साक्षात्कार पर आधारित मई 2018

उपर्युक्त तालिका 2 से विदित होता है कि 23.80 प्रतिशत परिवार द्वारा शौचालय निर्माण के लिए किसी प्रकार का आवेदन प्रस्तुत नही किया, जो गरीबी एवं जानकारी के अभाव का परिणाम था, जबकि 42.86 प्रतिशत परिवारों को अभी तक स्वीकृति नही मिली जिसका प्रमुख कारण राजनैतिक द्वेश एवं अनुदान स्वीकृत के लिए सुविधा शुल्क प्रदाय न करना, 14.28 प्रतिशत लोगों को शौचालय निर्माण के लिए राशि की प्रथम किश्त आवंटित हुई, किन्तु अन्य किश्तो के भुगतान न किये जाने से शौचालय का निर्माण न हो पाया। 4.76 प्रतिशत लोगो ने विहित कार्य के अतिरिक्त अन्य मदों में राशि को व्यय करना आदि प्रमुख कारण रहे है।

लक्ष्य प्राप्ति के बाधक तत्व

ग्राम पंचायत भीर में शत–प्रतिशत सुलभ शौचालय के लक्ष्य की पूर्ति मार्च 2018 तक नही हो सकी। लक्ष्य की प्राप्ति न होने की प्रमुखा बाधाएं इस प्रकार है–

निर्धनता: बहुसंख्यक ग्रामवासी विपन्न है जैसाकि साक्षात्कार में शामिल परिवारों के आय के स्वरूप से स्पष्ट होता है– साक्षात्कार में शामिल 60 परिवारों में वार्षिक आय निम्नानुसार पाई गयी –

तालिका 3: आय वर्ग

क्र.	वर्ग	आय रुपये	संख्या	कुल से प्रतिशत
01.	उच्च	50000.00 से अधिक	09	15.00
02.	मध्यम	30000–49999	33	55.00
03.	निम्न	30000.00 से अधिक	18	30.00

स्त्रोतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण 2018.

अध्ययन के लिए चयनित 60 परिवारों में 15 प्रतिशत परिवार की आय 50000.00 से अधिक, 55.00 प्रतिशत 30000 से 50000 रु. के मध्य एवं 30.00 प्रतिशत परिवारों की वार्षिक आय रु. 30000. 00 से कम है।

शौचालय उपलब्धता एवं आय समूह में प्रत्यक्ष धनात्मक सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है, जिन 21 परिवारों के पास सुलभ शौचालय मार्च 2018 की स्थिति तक नही है, वे सब निम्न आय वर्गीय समूह की श्रेणी के है। निर्धनता के कारण सामाजिक दृष्टि से प्रभावहीन इस वर्ग को अभी भी शासकीय योजनाओं एवं सुविधाओं से दूर रखने का प्रयाय किया जाता है।

साक्षरता

शिक्षा के अभाव में लोगों को शासकीय योजनाओं की जानकारी नही हो पाती, फलतः उन्हे ऐसी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ नही मिल पाता। प्रतीक अध्ययन में जिन 21 परिवारों के पास सुलभ शौचालय नही है उनमें 18 ऐसे परिवार है, जो साक्षर नही है। साक्षरता के अभाव में समय पर सुलभ शौचालय की योजना से ये लोग अभी दूर है।

राजनैतिक प्रतिद्वन्दिता

ग्रामीण स्तर पर राजनैतिक प्रतिद्वन्दिता योजना प्रदाय में भेद–भाव पूर्ण स्थितियों को निर्मित करती है। ऐसे परिवार जो सरपंच के पक्ष वाले होते है, उन्हें समय पर तथा विपक्षियों को समय पर लाभ प्रदाय में देरी की जाती है। सर्वेक्षण में विदित

हुआ कि कुछ आवेदकों के आवेदन ही गुमा दिये, इसलिए योजना के लाभ मिलने में देरी हुई।
उर्पयुक्त के अतिरिक्त कुछ आवेदकों को योजना की प्रथम किश्त भुगतान की गई, जिसका व्यय अन्य कार्यो मे ंकर लिया गया, फलतः सुलभ शौचालय निर्मित न हो सका।

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप से ग्राम पंचायत भीर में स्वच्छ भारत अभियान योजना स्नैह–स्नैह विकास करना पर अग्रसर है, किन्तु वांच्छित लक्ष्य की पूर्ति अभी दूर है। यद्यपि सरपंच भीर के प्रतिवेदन पत्र के अनुसार ग्राम पंचायत 4 खुले में शत–प्रतिशत शौच मुक्त ग्राम है, किन्तु मैदानी स्तर पर सत्य नही है। इसी प्रकार शौचालय निर्माण के लिए रु. 12000.00 राशि अनुदान के रूप में देय है किन्तु 1000.00 ही स्वीकृत किये गये है, जिसका प्रभाव शौचालय निर्माण की गुणवत्ता पर होगा। अर्थात शौचालय टिकाऊपन निहित अवधि तक रहनी संदिग्ध है। उक्त स्थिति गरीबी, अशिक्षा, राजनैतिक प्रतिद्वन्दिता जैसे कारणों से सफलीभूत नही हो पा रही है।

सुझावः

ग्राम पंचायत के नागरिकों में शिक्षा प्रसार, आर्थिक विकास को गतिशील करने के प्रयासों एवं प्रशासनिक चुस्ती ताकि राजनैतिक विद्वेष निस्प्रभावी हो सके, आदि जैसे प्रयासों तथा स्वच्छता मिशन में सबको साथ लेकर काम करने की प्रवृत्तियों के विकास से वान्छित लक्ष्य को प्राप्त कर ग्राम पंचायत के स्वास्थ्य स्तर में वृद्धि की जा सकेगी।

सन्दर्भः

1. स्वच्छता एक जीवन शैली, संपादकीय योजना नव. 2018 पृ. 5.
2. दुर्गाशंकर मिश्र – स्वच्छता क्रान्ति, शहरी भारत की सफाई, योजना, नव. 2018 पृ. 44.
3. धरातल पत्रक 63 एच., सर्वे ऑफ इंडिया, देहरादून वर्ष 1992.
4. कार्यालय सरपंच ग्राम पंचायत भीर.
5. जिला जनगणना पुस्तिका जिला रीवा, सेन्सज ऑफ इण्डिया नई दिल्ली 2011.
6. क्षेत्रीय सर्वेक्षण 2018